Sl. 41, v. 1, b. নৃথামা তন্ত্রাহিন: (নৃথামা: শ্লন্ত্রাহিন:) plus correctement নৃথামান্ত্রাহিন:, attendu qu'il n'y a pas ici élision, mais synérèse par suite d'une irrégularité déjà signalée par M. de Schlegel (Notes du Bhagavad-gita, p. 117), par M. Bopp (Grammaire Sanscrite, § 78, remarques 1, 2) et par M. Chézy (Notes de l'épisode de Sacountald, p. 57). On peut aussi considérer নৃথা-মান্ত্রাহিন: comme un mot composé (Voyez Grammaire Sanscrite de Bopp, § 662).

डा. ४४. चित्रयया पाणिग्रहणस्थाने ब्राह्मणिववाहे ब्राह्मणहस्तपरिगृहीतकाण्डैकदेशो ग्राह्मः। वैश्यया ब्राह्मणचित्रयावधृतप्रतोदैकदेशो ग्राह्मः। श्रूद्रया पुन-र्दिज्ञातित्रयविवाहे प्रावृतवसनदेशा ग्राह्मा ॥ (Coull.)

SI. 45, v. 1, a. ऋतुर्नाम शोणितद्रश्नीपत्नितो गर्भधार्णयोग्यः स्त्रीणामवस्याविशेषः। = v. 2. तानि (पर्व्वाणि) वर्ज्जियवा भार्ध्याप्रीतिर्वतं यस्य स तद्वतो उन्तावप्युपेयात् ऋत द्व रितकाम्यया न तु पुत्रोत्पा-दनशास्त्रबुद्धाः॥ (Coullowa.)

SI. 46. अत्र रात्र्यहः शब्दावहोरात्रपरौ । = v. 1, b. षोउशाहोरात्रा मासि मासि ॥ (Coullouca.)